ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

अलवर गुणीजनखाने की ग्रंथ चित्रण परम्परा

Alwar Gunijankhana's Treatise Illustration Tradition

Paper Submission: 15/02/2021, Date of Acceptance: 26/02/2021, Date of Publication: 27/02/2021

बेला माथुर
सह– आचार्य,
विभागाध्यक्ष,
चित्रकला विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बून्दी, राजस्थान, भारत

सारांश

अलवर राजपूताने की बहुत पुरानी स्टेट नहीं रही लेकिन प्राचीन तथा मध्यकालीन समय में प्राचीन वैभव की द्वष्टि से अलवर जनपद का विशेष महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भौगौलिक द्वष्टि से भी देखा जाऐ तो अलवर राजस्थान का सिंह द्वार है।

राजस्थान में अलवर शैली की चित्रकला का महत्वपूर्ण स्थान है। यहा के राजा प्रतापसिंह बख्तावर सिंह विनय सिंह बलवन्त सिंह (तिजारा) शिवदान सिंह मंगल सिंह तथा जयसिंह के समय चित्रकला के क्षैत्र में निरन्तर प्रगति होती रही। सुलिखित एंव चित्रित ग्रंथ यहां की कला की विशेषता रही है। यहॉ के राव राजाओ नें कला एंव कलाकारो को विशेष स्थान तथा सम्मान दिया। आज भी यह सुलिखित चित्रित ग्रंथ अलवर संग्रहालय की प्रमुख धरोहर है।

Alwar is not a very old state of Rajputana, but in the ancient and medieval times, Alwar district has a very important place due to the dualism of ancient glory. Alwar is the lion gate of Rajasthan even if seen from geographical angle.

Rajasthan has an important place for Alwar style painting. Raja Pratapsingh Bakhtawar Singh Vinay Singh Balwant Singh (Tijara), Shivdan Singh Mangal Singh and Jaisingh continued to progress in the field of painting. The well-written and illustrated texts have been the specialty of the art here. Here, Rao Rajo gave special place and honor to art and artists. Even today, this well-illustrated painted book is a major heritage of the Alwar Museum.

मुख्य शब्द : कलाकारों की कार्य शाला, स्क्रोल – लिपखां पट्ट चित्र, हाशियाकारी–चित्र मे बोर्डर निर्माण करना, कैलीग्राफी–स्याही से सुन्दर लेखन यानि अक्षरांकन करना।

Artists' Work School, Scroll-Lipkhan Plat Paintings, Handicrafts-Making Boarders In Pictures, Beautiful Writing With Caligraphy-Ink Ie Alphabet.

प्रस्तावना

भारत में ग्रंथ चित्रण की परम्परा अत्यधिक प्राचीन है। प्रारम्भ में भूर्जपत्र एवं ताड़पत्र पर काव्य लेखन एवं चित्रण की परम्परा रही है। इसके फलस्वरूप जैन मंदिरो के भण्डारों एवं संग्रहालयों में असंख्य ग्रंथ सुरक्षित हैं। प्राचीन प्रतियों की द्वष्टि से जैसलमेर पाटण एवं खम्भात के जैन ज्ञान भण्डारों का नाम विशेषतः उल्लेखनीय है। इन सचित्र ग्रंथों के विषय जैन धर्म से अधिक संबंधित है क्योंकि इस धर्म में यह परम्परा रही है कि धार्मिक ग्रंथों का आलेखन एवं यथास्थान चित्रांकन करवा कर मंदिरों में भेट किए जायें ।[1] इस प्रकार के ग्रंथों में कल्पसूत्र,कालिकाचार्य कथानक, नेमिनाथ चरित्र,उतराध्ययन सूत्र आदि प्रमुख है। प्राचीन समय मे अन्य ग्रंथ भी चित्रित किये जाते रहें होंगे किन्तु काल कवलित होने के कारण उनकी जानकारी नगण्य है। ताड़पत्रीय ग्रंथों का एक निश्चित आकर रहा है तथा अलग अलग पत्रों पर पार्श्व में लेखन एवं चित्रांकन कर उन्हें बीच में छेद कर ग्रंथित कर दिया गया है। 10 वी शताब्दी से लेकर 12 वीं शती तक के ग्रंथ भूर्जपत्र या ताड़पत्र पर ही उपलब्ध हैं।

12 वीं शती में कागज के आविष्कार ने ग्रंथ चित्रण में क्रांति उत्पन्न कर दी।[2]. कागज एक ऐसा माध्यम है जिसमें काव्य लेखन एवं चित्रण दोंनों का अंकन सहजता और विस्तार से हो सकता है। जैसलमेर ग्रंथ भण्डार में वि.स. 1277 (1220 ई.) का ग्रंथ उत्तराध्ययन सूत्र तथा वि.सं.1279 (1222 ई.) कांवाचस्पति मिश्र कृत न्यायतात्पर्य टीका कागज पर ही अकिंत है।[3]. 13 वीं से 15 वीं शती तक ताड़पत्र एवं कागज दोनों ही माध्यमों में ग्रंथों के अंकन की प्रथा विद्यमान रही तदनन्तर कागज की चित्रोपयोगिता ने पोथी चित्रण की

परम्परा को अधिक लोकप्रिय कर दिया। इस परम्परा को विस्तार देने का श्रेय सगुण भक्ति आन्दोलन एवं मुगल शासन के संस्थापन को भी है। सगुण भक्ति ने लोक जीवन को नए उत्साह एवं नवीन प्रेरणा से ओतप्रोत कर दिया अवधारणाओं एवं विचारो की नवीन शक्ति पाकर तथा साकार की चित्रोपयोगिता के कारण कलाएं अभिव्यक्ति का माध्यम बन गयी फलस्वरूप राम और कृष्ण के चरित्र तथा अन्य लोक गाथाएं काव्य और चित्रकला के माध्यम से साकार हो उठी । साथ में ही मुगल शासन की स्थापना से ग्रथ लेखन एवं चित्रण की परम्परा को विशेष बल मिला। हुमायु के साथ फारस के दो कलाकार सैयद अली और अब्दुल समद भारत आए जिन्होंने अमीर हम्जा को चित्रण किया।कलाओं के पारखी एवं संरक्षक बादशाह अकबर के दरबार में बसावन,दसवन्त सांवलदास , फारूखबेग, मुराद आदि प्रमुख चित्रकारों को प्रश्रय मिला जिन्होंने बाबरनामा,अकबरनामा,रज्मनामा तूतीनामा आदि ग्रंथो के अतिरिक्त महाभारत,अनवार–ए–सुहाली (पंचतत्र) नलदमन जैसे भारतीय ग्रंथो का कलात्मक चित्रण भी किया।[4]. अकबर के बाद विभिन्न भारतीय चित्र शैलियों में सचित्र ग्रंथो के आलेखन की प्रथा ही चल पड़ी।

मुगल, राजस्थानी तथा पहाड़ी चित्रकला में सूफीकाव्य,रामकाव्य,कृष्णकाव्य,रीतिकाल बारहमासा,षटऋतु वर्णन, रागरागिनी आदि पर आधारित जो पोथी चित्र एवं लघु चित्र बने, वे सचित ग्रंथों की परम्परा एवं विकास की महत्वपूर्ण कड़ी हैं।

कागज के अविष्कार से ताड़पत्रीय ग्रंथों के निश्चित आकार भी समय एवं रूची के अनुसार घट–बढ़ गये परिणामस्वरूप ग्रंथ लेखन एवं चित्रण के क्षेत्र में अनेक प्रयोग हुए। इनमें उल्लेखनीय है :

1. ग्रंथ के पृष्ठ के पार्श्व में चित्रण एवं बीच में लेखन
2. ग्रंथ के बीच में यत्र–तत्र चित्रण
3. ग्रंथ के प्रत्येक पृष्ठ के एक ओर लेखन एवं सामने के पृष्ठ पर चित्रण
4. ग्रंथ के पृष्ठ के ऊपरी भाग पर छंद या पद,शीर्षक–लेखन एवं उसके भावानुसार चित्रांकन

उपर्युक्त ढंग से लिखित एवं चित्रित पृष्ठों को पुस्तकाकार रूप में ग्रंथित कर जिल्दसाजी कर दी गई है जिससे किसी भी काव्य के क्रम का सहज ही ज्ञान हो सकता है। ये ग्रंथ भी दो रूपों में प्राप्त हैं–पूर्ण रूप और खण्ड रूप में । गीता भागवत गीतगोविन्द रसिकप्रिया बिहारी सतसई ढोलामारू रा दुहा दुर्गा सप्तशती आदि ग्रंथ विशेषत पूर्णरूप में मिलते हैं। काव्य का लघुआकार चित्रोपयोगिता एवं लोक में प्रसिद्वि आदि संपूर्ण चित्रण का आधार बना।दुर्भाग्यवश इधर उधर बिखर जाने एवं बेच दिए जाने से भी ग्रंथ की पूर्णता नष्ट होती रही । अपूर्ण या खण्ड ग्रथों में केवल रूचिकर एवं चित्रोपयोगी पदो को ही चित्रण का आधार बनाया गया । ऐसे ग्रंथ एलबम के रूप में उपलब्ध हैं।

लघु चित्र का वह स्वरूप जिसमें ऊपर पद लिखित है और पद के भाव के आधार पर चित्रण किया गया है– पोथी चित्रणकी परम्परा ही माना जाना उचित होगा । इस प्रकार भारतीय चित्रकला में सचित्र ग्रंथ एवं चयनित पदों पर आधारित चित्रण बहुलता से उपलब्ध है।

अध्ययन का उद्देश्य

अलवर शैली का ग्रंथ चित्रण परम्परा अत्यंत प्राचीन है। वर्तमान संदर्भ में भी यह ग्रंथ चित्रण परम्परा अत्यंत सार्थक सिद्ध हो सकती है एवं किसी भी साहित्य या ग्रंथ को रोचक बनाने की दृष्टि से यह एक सफल एवं सार्थक प्रयास सिद्ध होगा। साहित्य के क्षेत्र में यह सफलतम् कलात्मक प्रयास है।

अलवर शैली और सचित ग्रंथ

राजस्थान चित्रकाला में ढूंढाड़ स्कूल के अन्तर्गत अलवर की चित्रकला का महत्वपूर्ण स्थान है। अलवर राज्य कुशवाहा वंशजो से सबंधित होने के कारण अलवर की चित्रकला को ढूंढाड़ शैली की सांस्कृतिक समृद्वि विरासत में मिली इसलिए प्राकृतिक परिवेश एवं राजपूत–मुगल कलाकारों के आपसी संपर्क के कारण 18 वीं शती उतरार्ध से लेकर 19 वी शती अतं तक अलवर शैली ने अपनी अलग पहचान बनायी । भिति चित्रों (यथा राजगढ़ का शीशमहल,दीवानजी की हवेली (अलवर) लड्डू खवास का मंदिर (अलवर),हनुवन्तसिंह की छतरी (थाना) आदि) तथा सचित्र ग्रंथ, लिपटवां पट चित्र (स्क्रोल),हाथीदांत एवं भोडल पर चित्रांकन की उपलब्धि ने आज अलवर शैली को स्थापित कर दिया है।रावराजा प्रतापसिंह (1770–1792) तथा रावराजा बख्तावरसिंह (1792–1814) ने अधिकतर अपना समय राज्य की स्थापना में ही लगाया, अतः कला की उत्रति इतनी विस्तार से न हो सकीकला के उत्थान की दृष्टि से रावराजा विनयसिंह (1814–1857) तथा तिजारा के राजा उन्ही के भाई बलवन्त सिंह (1826–1844) का समय महत्वपूर्ण है। इन दोनो राजाओं ने ग्रंथ चित्रण की परम्परा को जो योगदान दिया वह अविस्मरणीय है।[4]. ये दोनो ही राजा कलाओं के प्रति विशेष अनुराग रखते थे अतः इन्होने अपने गुणीजनखानों में मुसव्विरों अर्थात् चितेरों, कैलीग्राफरों अथवा सुलेखकों, वसली एवं बॉर्डर निर्माताओं तथा जिल्दसाजों को विशेष स्थान दिया। साथ ही जो भी कलात्मक ग्रंथ इनकी दृष्टि में आये उन्हें इन्होने किसी भी कीमत पर खरीद लिया [5]. यही कारण है कि अलवर संग्रहालय सचित्र महत्वपूर्ण ग्रंथों की धरोहर के कारण आज भारत के प्रमुख संग्रहालयों में माना जाता है।

अलवर संग्रहालय तथा निजी संग्रहों में अरबी फारसी, सस्कृत,हिन्दी आदि के जो ग्रंथ उपलब्ध हैं, उनमें संस्कृत के भागवत,महाभारत,भगवतगीता, दुर्गा सप्तशती,गीतगोविन्द आदि के महत्वपूर्ण स्क्रोल एवं सचित्र ग्रंथ विशेषताः उल्लेखनीय है। अरबी–फारसी के ग्रंथो की यहॉ बहुतायत है जिसमें से कुछ समय–समय पर खरीदे गए एवं कुछ कला प्रेमी राजाओं द्वारा तैयार करवाए गए। गुलिस्तां,बोस्तां अनवार–ए–सुहेली,कुलियात अमीर खुसरो, कुल्लियात सादी,तोफातुल इराकीन,यूसुफ जुलेखां,बदरे मुनीर,वाकयात–ए–बाबरी सिकन्दरनामा, कुरान, दहपंद, सदपंद, हफ्तबंन्द काशी, नलदमन आदि ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथ अलवर संग्रहालय की धरोहर हैं जिनके आधार पर मुगल इतिहास एवं कला का पुनर्मूल्यांकन हो सकता है।

अलवर मुगल सम्पर्क

जैसा पुर्व में उल्लेख किया गया है,राव राजा विनयसिंह का कलाओं के प्रति विशेष लगाव था इसलिए उन्होंने कलाकरों कलावस्तुओं को विशेष आदर दिया। सन् 1814 से 1857 के समय में दिल्ली की मुगलिया सल्तनत जर्जरित हो चुकी थी,अंतः वहा के प्रतिष्ठित नागरिक एवं कलाकर पड़ौसी रियासतों मे अपना स्थान बनाने लगे। यों तो दिल्ली मुगलिया दरबार का अलवर रियासत मे संपर्क प्रारम्भ से ही रहा । खानवा के युद्ध के बाद खानजादाओं को परास्त कर बाबर ने अलवर को अपने अधिकारी में ले लिया तथा स्वयं और बहराम खां ने उनकी लड़कियों से विवाह कर लिया । इस प्रकार अब्दुर रहीम खानखाना की ननिहाल अलवर रही। रियासत बनने के बाद अलवर संस्थापक महाराजा प्रतापसिंह का मुगल दरबार से सम्पर्क सुत्र बना रहा। सन् 1773 में मुगल दरबार से बादशाह शाह आलम द्वारा उन्हें रावराजा की पदवी एवं माही मरातिब का सम्मान दिया गया।

19वीं शती के प्रारम्भ में बहुत से मुस्लिम परिवार अलवर में राज्य सेवा के लिए आए जिनमे दो परिवार महत्वपुर्ण थे। एक कासिमजहां का परिवार जिसके पुत्र अहमद बख्श खां को कंपनी की सेवाओं के कारण लार्ड लेक ने सन् 1803 लुहारू की नवाबी दे दी तथा लम्बे समय तक वह अलवर रियासत का वकील रहा।[7] दुसरा अब्दुल्ला बेगखान बहादुर सन् 1802 में अलवर रियासत की सेवाओं में आया किन्तु कुछ समय बाद ही वह 5 वर्ष के पुत्र को छोड़कर रियासत की सेवा करते हुए युद्ध में मारा गया। उसका बेटा मिर्जा आसदुल्ला खां बाद में मिर्जा गालिब के नाम से मशहूर हुआ। इन परिवार के आगमन के कारण बहुत से मुस्लिम पदाधिकारियों एवं कलाकारों को भी रियासत में पश्रय मिला। रावराजा विनयसिंह (1814–1857) कलाप्रेमी एवं मर्मज्ञ राजा थे अतः दिल्ली,आगरा,लाहोर,जयपुर से कलाकारों का लगातार आगमन होने लगा।

डालूराम और शिवकुमार राजराजा प्रतापसिंह के समय के प्रमुख कलाकर थे जो भित्ति चित्रण में दक्ष थे।[8] बलदेव रावराजा बख्तावरसिंह के समय मे दिल्ली और सालिगराम जयपुर से अलवर आये।[9] दोनो ही कलाकारों ने बख्तावर सिंह के दरबार और बाद मे रावराजा विनयसिंह के दरबार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। बलदेव तो दरबार का प्रमुख मुसव्विर था जिसने रावराजा विनयसिंह को भी चित्रकारी की शिक्षा दी। सालिगराम बाद में तिजारा सरकार में बलवंतसिंह के दरबार में चला गया। विनयसिंह के समय में दिल्ली से भांति भांति की कलाओं में निपुण कलाकार अलवर आए और राजकीय सेवा मे लग गये। गुलाम अली तथा कारी अब्दुल रहमान जैसे प्रतिष्ठित कलाकारो नें मुगलो की अंतिम कलात्मक तकनीक के सहारे अलवर की चित्रकला में चार चांद लगाए। सचित्र ग्रंथों के सुलेखन हेतु मिर्जा देहलवी एवं जिल्दसाज नत्थाशाह दरवेश और अब्दुल रहमान क्रमशः दिल्ली और लाहौर सेआए जिनकी जिल्दसाजी के उत्कृष्ट उदाहरण अलवर संग्रहालय में उपलब्ध हैं।[10] विनयसिंह के दरबार में दस्तकारों तथा अन्यतरतब दिखाने वालों का भी जमघट था। शेख रहीमुल्ला तथा सादिक अली मल्लयुद्व में उस्ताद थे।[11] यही नहीं भारतीय संगीत की धुवपद गायकी के जनक बहरमखां डागर लाहौर से राजा रणजीतसिंह के दरबार से बाहदुरशाह जफर के शाही दरबार में रहते हुए अलवर गुणीजन खाने की शोभा बढाकर जयपुर दरबार में आ गए। इस दृष्टि से रावराजा विनयसिंह का गुणीजनखाना हिन्दू मुस्लिम एकता का महत्वपुर्ण ठिकाणा था। यही कारण है कि यहां की कलात्मक धरोहर में राजपूत मुगल कला का उत्कृष्ट समन्वय देखने को मिलता है। विनयसिंह से पूर्व राज्य की सरकार ने किसी भी प्रशासनिक प्रणाली को व्यवस्थित रूप से नही अपना रखा था। इसलिए दिल्ली के योग्य प्रशासक अम्मुजान और उसके दो भाई रावराजा की सेवा में आए और उसे उन्होने सन् 1838 में दीवाना बना दिया जिसके परिणामस्वरूप अनेक प्रशासनिक सुधार हुए। यह निश्चित है कि दीवान अम्मुजान की वजह से अनेक कलाकर,, दस्तकार दिल्ली – आगरा से अलवर आए।

अलवर शैली : लघु चित्र तथा ग्रंथ चित्रण का स्वरूप

इस प्रकार अलवर राज्य के राजसी दरबार में पांरपरिक हिन्दू कलाकर और दिल्ली, लाहौर , आगरा से आए मुस्लम कलाकारों के आपसी मिल जुल कर कार्य करने से यहाँ की चित्रकला में एक विशिष्ट शैलीगत विशेषता उभर कर आयी जिससे इस रियासत के सांस्कृतिक वैभव ने उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया। देश के गिने चुने सग्रहालयों मे अलवर के राजकिय संग्रहालय का महत्वपुर्ण स्थान है।

खरीदे गए प्रमुख ग्रंथ

रावराजा विनयसिंह सचित्र ग्रंथ के पीछे इतने दीवाने थे कि किसी भी कीमत पर वे उत्कृष्ट ग्रंथ को हाथ से नहीं जाने देते थे। राजकीय संग्रहालय अलवर में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं जो इस तथ्य के साक्षी हैं। कुरान का एक महत्वपुर्ण अलंकृत ग्रंथ (सं. 784) रावराजा विनयसिंह द्वारा तीन हजार रू और सम्मान का सिरोपाव देकर एक मुस्लिम यात्री से खरीदा गया जो कला का उत्कृष्ठ उदाहरण है। सुलेखन एवं ज्योमितिक डिजाइनों का यह एक अनुपम ग्रंथ है जिसमें कुरान की आयतें अरबी भाषा में कलात्मक ढंग से गहरी नीली स्याही और फारसी में नीचे उसका अनुवाद लाल स्याही में भव्य रूप से सुलिखित है। 472 पृष्ठ के इस धार्मिक ग्रंथ के लेखन और अलंकरण में कितना समय लगा होगा यह कल्पना से परे है। इसी प्रकार शेख सादी का काव्य ग्रंथ बोस्तां अलवर संग्रहालय की अनुपम धरोहर है (सं. 265) है जिसे सन् 1538 में मुहम्मद बिना इशाक ने कापी किया और जिसका सुलेखन (कैलीग्राफी) कला का उतम उदाहरण है। इसमें फारसी शैली के दस चित्र अंकित है।ऐसा भास होता है कि इसी ग्रंथ को देखकर रावराजा के मन में गुलिस्तां के चित्रांकन की कल्पना आई निश्चय ही इसे खरदा गया होगा या फिर किसी ने भेंट किया होगा।बाबर की जीवनी से संबंधित एक ग्रंथ दिल्ली शाही पुस्तकालय का वाकयात–ए–बाबरी (सं. 2081) भी इस संग्रहालय की निधि है जिस पर एक मुहर हुमायूं की,दो अकबर की,एक जहांगीर और दो शाहजहां की अकिंत है। चार सौ सतावन पृष्ठ के इस ग्रंथ में परशियन और मुगल शैली के 18 उतम चित्र हैं। मूलतः यह ग्रंथ तुर्की भाषा में

है पर हुमायूं के समय (सन् 1530) में खानखाना बहराम खां द्वारा फारसी में अनूदित इस ग्रंथ का सुलेखन हिरात के अलीउल कातिब ने किया तथा सादुल्ला मुहम्मद ने इसमें चित्रांकन किया। अलवर के मशहूर जिल्दसाज अब्दुल रहमानकारी ने इस ग्रंथ की जिल्दसाजी कर उसमें चार चांद लगा दिए।

महाराजा विनयसिंह के समय में इस प्रकार बहुत से सचित्र ग्रंथ मुगलिया सल्तनत के बिखर जाने के कारण अलवर में बिकने आ गए या मुस्लिम अमीर उमरावों ने अपनी साख जमाने के लिए उन्हें भेट किए । कुल्लियात अमीर खुसरो (क्रम सं. 2131) नामक ग्रंथ के सम्बध में जिक्र आता है कि सन् 1846 में उसे दीवान अम्मूजान ने दिल्ली से लाकर रावराजा को भेंट किया।[12] हिन्दी, संस्कृत औरउर्दू–फारसी के बहुत से ग्रंथ रावराजा प्रतापसिंह जयपुर दरबार से भी अपनी प्रतिष्ठा के कारण अलवर ले आए।

सुलिखित एवं चित्रांकित प्रमुख ग्रंथ

रावराजा विनयसिंह तिजारा के रावराजा बलवंतसिंह (1826–1845) तथा रावराजा शिवदान सिंह को ग्रंथ चित्रित करवाने का बड़ा शौक था। रावराजा विनयसिंह स्वयं चित्रकार बलदेव से चित्रकारी सीखते थे।यही कारण है कि गुलिस्तां का आठवां अध्याय (जिसके तेईस पन्ने उपलब्ध हैं) स्वयं रावराजा द्वारा सन् 1833 का सुलिखित है। इसी प्रकार रावराजा शिवदान सिंह द्वारा सन्1864 में सुलिखित 9 पन्ने नसीहत हकीम लुकमान भी इस बात का साक्षी है कि अलवर के राजाओं को सुलेखन और चित्रकारी का उसी प्रकार शौक था जैसा पेपर कटिंग और डिजाइन बनाने का शौक जयपुर के सवाई राजा ईश्वरीसिंह को था।[13]

संस्कृत–हिन्दी ग्रंथ

अलवर के कारखाने में संस्कृत और हिन्दी के लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध ग्रंथो का चित्रांकन समय–समय पर बड़ी संख्या में हुआ जिनमें भागवत एवं भागवत गीता के लगभग एक दर्जन स्क्रोल और सचित्र ग्रंथ राजकीय संग्रहालय में उपलब्ध हैं। महाभारत का सर्वाधिक बड़ा स्क्रोल 257– 3×5 शायद अलवर संग्रहालय के अतिरिक्त और कहीं उपलब्ध नहीं है।[14] यह स्क्रोल कला तथा संस्कृत सुलेखन की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसमें सुनहरी अलंकरण के साथ छोटे–छोटे 54 कलात्मक चित्र भी बने हुए हैं जिनमें अलवर शैली की बारीकी का काम देखा जा सकता है। इसी प्रकार दुर्गा सप्तशती, दुर्गा कवच,कालीसहस्त्र नाम,शिवस्त्रोत, पंचस्त्रोत, गीतगोविन्द, शिव कवच आदि के सचित्र ग्रंथ गुटके तथा स्क्रोल अलवर शैली की कलात्मकता और राजाओं की गुणग्राहकता का परिचय देते हैं।

हिन्दी के ग्रंथों में तुलसीकृत रामचरितमानस की दो महत्वपूर्ण प्रतियाँ भी हैं। प्रथम (क्रम सं. 2045) में पांच सौ पन्द्रह पृष्ट एवं एक चित्र उपलब्ध है। इसे रावराजा विनयसिंह के समय में सन् 1831 में तैयार करवाया गया। दूसरा ग्रंथ सन् 1802 का उपलब्ध है जिसमें दो सौ अठान्नवें पृष्ट एवं 17 चित्र अंकित है।[15]

अरबी–फारसी एवं उर्दू के सचित्र ग्रंथ

अलवर के कारखाने में सर्वाधिक सचित्र सुलेखन,जिल्दसाजी और हाशिया–सज्जा का काम फारसी एवं उर्दू के हस्तलिखित ग्रंथों में हुआ जिसका प्रमुख कारण राज–काज में उर्दू फारसी का प्रचलन था। प्रशासन चलाने वाले राज्याधिकारी मुगल दरबार से आए मुसलमान थे,चाहे वे अलवर के वकील अहमद बख्श हों या दीवान अम्मूजान । वे सभी फारसी के ज्ञाता और विद्वान तथा राजकाज की भाषा के पक्षधर थे,।स्वयं रावराजा विनयसिंह एवं तिजारा सरकार के राजा बलवंतसिंह फारसी के जानकार, पोषक और प्रेम थे । रावराजा शिवदान सिंह तो दीवान अम्मूजान की देखरेख में पले ही थे, अतः उन पर तो मुस्लिम सस्कृति का पूर्ण प्रभाव था। कि विनयसिंह के समय में फारसी–उर्दू के ग्रंथों का चित्रण एवं सुलेखन बहुलता से हुआ ।

गुलिस्तां

13 वीं शताब्दी में शेख. सादी ने गुलिस्तां, बोस्तां जैसे ग्रंथ लिखकर मध्य एशिया में प्र्याप्त ख्याति प्राप्त की । मुसलमानों के आगमन पर शेख सादी के ग्रंथ और उनकी ख्याति भारतवर्ष में भी फैलना स्वाभविक थी । अलवर संग्रहालय में प्राप्त बोस्तां की प्रति के अनुसार रावराजा विनयसिंह ने गुलिस्तां की कॉपी तैयार करने की आज्ञा दी। 287 पृष्ठों के इस हस्तलिखित ग्रंथ में 17 रंगीन कलात्मक एवं परिश्रम साध्य चित्र हैं। इसके प्रत्येक पन्ने को तैयार करने में 15 दिन का समय लगा तथा बाहर वर्ष में एक लाख रूपये की कीमत से यह ग्रंथ सन् 1856 में तैयार हुआ।[16] बहुत से पन्ने सुलेखन और चित्रण के समय खराब हुए , फलस्वरूप इस ग्रंथ की तीन प्रतियां तैयार हो। गयी। उनमें से एक प्रति महाराजा अलवर के पास दूसरी संग्रहालय में और तीसरे के बारे मे कहा जाता है कि स्वर्गीय महाराजा जयसिंह ने अपने अनन्य मित्र पाटियाला के महाराजा को भेंट कर दी। इस कलात्मक ग्रंथ का सुलेखन काली स्याही और सोने की हिल से आगा मिर्जा देहलवी ने किया जो अलवर दरबार का शाही सुलेखक था। इस पोथी में बलदेव और गुलाम अली ने चित्रकारी की । हाशिया–नक्काशी (जो उस समय महत्वपूर्ण कार्य समझा जाता था) को नत्थाशाह पंजाबी और कारी अब्दुल रहमान ने किया । जिल्दसाजी में पांरगत कारी अब्दुल रहमान ने इस ग्रंथ की सुन्दर और कलात्मक जिल्दबंन्दी भी की।

कला की दृष्टी से इस सचित्र ग्रंथ का एक–एक पन्ना उत्कृष्ट है जिसमें सुलेखन एवं हाशियों की सज्जा कारी कलाकारों ने अपनी प्रतिभा को उजागर किया। आठ अध्यायों में विभाजित इस पुस्तक की विषयवस्तु में चरित्र निर्माण पर, अधिक जोर दिया गया है प्रथम अध्याय बादशाहो के चरित्र निर्माण पर ,दूसरा दरवेशो के चरित्र पर, तीसरा संतोष की विशिष्टता, चौथा चुप रहने का लाभ, पांचवां जवानी और प्रेम,छटा वृद्धावस्था और कमजोरी, सातवां शिक्षा का महत्व एवं आठवां 106 सदाचार के नियमों से संबंधित है। 17 उतर चित्रों से सुसज्जित यह ग्रंथ मुगल काल से प्रभावित अलवर में बसे गुलाम अली जैसे चित्रकार ने भी इस ग्रंथ की चित्रकारी में अपना सक्रिय योगदान दिया। सन् 1856 में जब यह ग्रंथ तैयार हो गया तो रावराजा को भेंट किया गया। एक

चित्र इस घटना को ही दर्शाता है। राव राजा सिंहासन पर बैठे हैं। तथा उनके प्रमुख सामन्त राजा बहादूर पद्मसिंह नीचे बैठे है। दरोगा ड्योढ़ी खास लक्ष्मण टोडवाल बनियां सुलेखक का परिचय दे रहा हैं। चौरी बरदार लड्डू खवास चंवर एवं बालगोविंद खवास मोरछल ढुला रहा है। प्रमुख सुलेखक आगा मिर्जा देहलवी भेंट करने के लिए पुस्तक लेकर खड़ा है। यह चित्र कला की दृष्टि से ही नहीं वरन् ऐतिहासिक दृष्टी से भी महत्वपूर्ण है।[17] गुलिस्तां की प्रतियाँ कराने में राजाओं का विशेष लगाव था। यही कारण है कि अलवर में सुलिखित एवं चित्रांकित लगभग आधा दर्जन गुलिस्तां की हस्तलिखित प्रतियाँ अलवर संग्रहालय में उपलब्ध है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि स्वयं रावराजा विनयसिंह ने सन् 1833 में बनी गुलिस्तां की पोथी के आठवें अध्याय का सुलेखन किया जिसमें 23 पृष्ठ है।

अलवर के कारखाने में लगभग डेढ़ दर्जन से अधिक सुलेखक थे जिन्होंने समय समय पर ग्रंथो का सुलेखन किया। आगा मिर्जा देहलवी उनमें सर्व प्रमुख थे जिन्होंने गुलिस्तां के अतिरिक्त दीवाने हाफिज (क्र.सं. 297) सदपंद (क्र.सं. 652) आदि महत्वपूर्ण सचित्र ग्रंथो का भी सुलेखन किया। गुलाम मुस्तफा ने सदाचार तथा नैतिक शिक्षा संबंधी शेख सादी के ग्रंथ करीमां (क्र.सं. 275) का नाखून से सुलेखन कर नए मानदण्ड स्थापित किए। 86 पृष्ठों का यह ग्रंथ सुलेखन का एक नायाब उदाहरण है। विनयसिंह के समय में सन् 1841 में सुलेखक अब्दुल्ला बेग ने 469 पृष्ठों का आखलकुल मोहसनिन ग्रंथ तैयार किया जिसकी जिल्दसाजी अब्दुल रहमान कारी ने की। 253 पृष्ठों की गुलिस्तां की एक कापी भी अब्दुल्ला बेग ने तैयार की थी । उन्ही के द्वारा अनवार–ए–सुहेली नामक 609 पृष्ठों का ग्रंथ भी तैयार किया गया था जिसकी जिल्दसाजी भी अब्दुल रहमान ने की थी। प्रेम काव्य संबंधी मीर हसन के उर्दू ग्रंथ बदरे मुनीर का सुलेखन भी अब्दुल्ला बेग द्वारा ही सन् 1832 में किया गया था। इसमें 136 पृष्ठों का सुलेखन और 24 सुन्दर चित्रों की सज्जा है।

विनयसिंह के समय में ही मदाद अली नाम का प्रसिद्ध सुलेखक अलवर में रहा जिसने दसतीर,शाह दस्तरी तोफातुल इराकीन जैसे ग्रंथों का सुन्दर सुलेखन किया । ये ग्रंथ सन् 1848 से 1853 के समय में लिखकर रावराजा विनयसिंह जी को भेंट किए गए।

काशी के प्रसिद्ध कवि काशी के ग्रंथ हफ्तबंद काशी का हाथीदांत के तेरह पन्नों पर नुरउल्ला नामक सुलेखक (कैलीग्राफर) ने सन् 1835 में सुलेखन कर एक नवीन चमत्कार किया।[18]

रावराजा शिवदान सिंह को भी सुलेखन का शौक था, अतः स्वयं उनके द्वारा नसीहते लुकमान हकीम के नौ पन्ने (सन्1864) उपलब्ध हाते हैं जिनकी जिल्दसाजी अब्दुल रहमान ने की ।[19] इनके अतिरिक्त नूर उल्ला,मुहम्मदबक्श,याकूब बेग, अशफाक,रहीमुल्ला मुहम्मद मसाद, अब्दुल रसूल,मीर मुहम्मद शाह मुहम्मद बिन इशाक, मुहम्मद मसाहिदी खुरासानी शेखनिजामी गंजुई, नकीब खां,शेख अहमद आदि सुलेखकों ने रावराजा विनयसिंह रावराजा शिवदान सिंह और तिजारा सरकार के राजा बलवन्तसिंह के समय में जमकर काम किया। वास्तविकता तो यह है कि 1829 से 1857 तक की कालावधि में इस प्रकार का कार्य तीव्र गति से हुआ। संस्कृत और हिन्दी के सुलेखकों में शंकरनाथ (1829 ई.) का नाम उल्लेखनीय है।

इस प्रकार ग्रंथ चित्रण की परम्परा में अलवर में जो महत्वपूर्ण कार्य हुआ उसमें रावराजा विनयसिंह, रावराजा बलवंतसिंह और रावराजा शिवदान सिंह का महत्वपूर्ण और अभूतपूर्ण संरक्षण और प्रश्रय रहा। रावराजा विनयसिंह और उनके भाई बलवंतसिंह सन् 1826 में अलवर और तिजारा की गद्दी पर बैठे। बलवंतसिंह ना औलाद गुजर गये इसलिए पुनः सन् 1845 में तिजारा सरकार और उसकी कलात्मक सामग्री पुनः अलवर पहुंच गयी।[20] बलवंतसिंह मुस्लिम महारानी मूंसी के पुत्र थे इसलिए उर्न पर मुस्लिम अधिकारीयों का वरदहस्त भी था परन्तु वह राम और दुर्गा के परम् भक्त थे तथा साथ में हिन्दी– सस्कृत के भी बड़े विद्वान थे। यही कारण है कि अलवर संग्रहालय में सुरक्षित हिन्दी–सस्कृत के अधिकतर ग्रंथ एवं स्कोल उनके राज्य में तैयार किए।

निष्कर्ष

ये कलात्मक ग्रंथ सांस्कृतिक समन्वय के प्रतीक है। अलवर दरबार में मुस्लिम–हिन्दू सुलेखक और कलाकार मिलकर कार्य करते थे। वसली का निर्माण कोई करता था तो उसके खत और हाशियों की सज्जा दूसरा कलाकार करता था। सुलेखन किसी के जुम्मे था तो चित्रकारी दूसरे कलाकार करते थे। यही नहीं ग्रंथ की जिल्दसाजी करने वाले अब्दुल रहमान और नत्थशाह दरवेश जैसे जिल्दसाजी होते थे। यही कारण है कि उपर्युक्त ग्रंथों के चित्रांकन में फारसी, मुगल तथा राजस्थानी चित्रकला का एक अनोखा समन्वय दृष्टिगोचर होता है जिसके माध्यम से अलवर शैली की विशिष्टतांए सहज ही उभर कर सामने आयी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *मुनि पुण्यविजय,आर्चाय श्री विजय वल्लभ सूरी–स्मारक ग्रंथ बम्बई ग्रंथ प्र. 11*
2. *राजस्थान ललित कला अकादमी वार्षिकी 1963, जयपुर, पृ. 11*
3. *जैसलमेर के बड़े मंदिर का ग्रंथ भंडार*
4. *डॉ0 जयसिंह नीरज/डॉ बेला माथुर अलवर की चित्रांकन परम्परा पृ.35*
5. *फणीलोल चकवती,ब्ंजंसवनहनम ।दक ळनपकम जव ळवअमतदउमदज डनेमनउ रू ।सूंत च्ंहमए 97*
6. *डॉ जयसिंह नीरज/डॉ बेलामाथुर, अलवर की चित्रांकन परम्परा,प्र.6*
7. *मखदूम शेख मुहम्मद, अरजंग तिजारा पृ.9*
8. *डॉ जयसिंह नीरज,विनय (अलवर अंक) पृ.150*
9. *वही–प्र.152*
10. *।कूंतक `णींदेए च्ंजतवदंहम वित जीम ।तज दक जीम तंरचनज `जंजम सूंत पद मपहीजममदजी दपदमजममदजी दक हनपकम जव हवअमतदउमदज उनेमनउ सूंत चंहम 100*

11. डॉ0 जयसिंह नीरज अलवर की चित्रकला, सरोवर, अंक नं 2,3, पृ0 41
12. फणीलाल चक्रवर्ती ब्ंजंजवहनम ंदक हनपकम जव हवअमतदउमदज उनेमनउ सूंतण्चंहम 100
13. सिटी पैलेस, म्यूजियम, जयपुर
14. डॉ जयसिंह नीरज/डॉ बेलामाथुर,अलवर की चित्रांकन परम्परा पृ. 41
15. वही पृ0 100
16. वही पृ0 39
17. सचित्र ग्रंथ
18. फणीलाल चक्रवर्ती, ब्ंजंसवहनम ंदक हनपकम जव हवअमतदउमदज उनेमनउ /सूंत चंहम 101
19. वही प्र0 100
20. डॉ. जयसिंह नीरज/डॉ बेलामाथुर अलवर की चित्रांकन परम्परा पृ0 10